

सौन्दर्य प्रतियोगिता

-नागार्जुन

गंगा की मछली..
यमुना की मछली..
सहेली थी दोनो-
हिल- मिल कर रहती थी
कभी - कभी निकल जाती दूर
संयम से आगे, और आगे, और आगे
एक बार हुआ यं कि
सुलग उठी स्पर्धा की आग दोने के अंदर

मै हुं सुन्दर, मै हु सुन्दर।
इस तु - तु - मै - मै - मे दिन चढा उपर
कि सहसा दे गया दिखाई कछुआ रेती पर
जाडे की धूप में पडा था पसर कर
मछलीया पास आयी
प्रणाम किया, बोली-
सच-सच कहिएगा बाबा,
हममे से किसका वाजिब है खुबसुरती का दावा

वयस्कर - बुजुर्ग सुधी शिरोमणि कछुआ
हिलाता रहा लम्बी गर्दन, दंखता रहा मछलीयों की ओर
बांला वह स्थितप्रज्ञ कुछ क्षण उपरान्त-
गंगा की मछली, तुम भी सुन्दर हो
यमुना की मछली तुम भी सुन्दर हो

तो फिर सच-सच बतला दुं-
पकी प्रज्ञा वाले बाबाजी बोले गर्दन हिलाकर
तुम भी सुन्दर हो गंगा की मछली,
यमुना की मछली, तुम भी सुन्दर हो
किन्तु बनिस्बत तुम दोनो के
मै अधिक सुन्दर हूं
बिल्लौरी कांच-सी कांती वाली यह गर्दन..
बरगद-सी छतनार ऐसे पीठ..
नन्हे मसुर - से ऐसे ये नेत्र..
देखी नही होगी ऐसी खुबसुरती
आओ, और निकट आओ।
यं मत घबराओ।

भागकर दोनों हो गई गायब
संगम की अतल जल राशि में
अध्रा ही रह गया
प्रवचन महामुनि का

हिंदुस्थान हमारा है

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

कोटि-कोटि कंठों से निकली आज यही स्वरधारा है
भारतवर्ष हमारा है यह, हिंदुस्थान हमारा है।

जिस दिन सबसे पहले जागे, नव-सृजन के स्वप्न घने
जिस दिन देश-काल के दो-दो, विस्तृत विमल वितान
तने
जिस दिन नभ में तारे छिटके जिस दिन सूरज-चांद
बने
तब से है यह देश हमारा, यह अभिमान हमारा है।

जबकि घटाओं ने सीखा था, सबसे पहले घिर आना
पहले पहल हवाओं ने जब, सीखा था कुछ हहराना
जबकि जलधि सब सीख रहे थे, सबसे पहले लहराना
उसी अनादि आदि-क्षण से यह, जन्म-स्थान हमारा है।

जिस क्षण से जड़ रजकण, गतिमय होकर जंगम
कहलाए

जब विहंसी प्रथमा ऊषा वह, जबकि कमल-दल मुस्काए
जब मिट्टी में चेतन चमका, प्राणों के झोंके आए
है तब से यह देश हमारा, यह मन-प्राण हमारा है।

कोटि-कोटि कंठों से निकली आज यही स्वर-धारा है
भारतवर्ष हमारा है यह, हिंदुस्थान हमारा है।